केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में कृषक–वैज्ञानिक वार्ता कार्यक्रम का आयोजन।

आज संस्थान में भारत की आजादी के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में जलवायु परिवर्तन, अनुकूल प्रजातियाँ, प्रौद्योगिकियाँ एवं पद्धतियाँ विषय पर कृषक वैज्ञानिक वार्ता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य संस्थान, करनाल व लखनऊ केन्द्र में 340 किसानों को खेती में समगतिशीलता बढ़ाने के बारे में जानकारी दी गई और उनकी कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने किसानों से अपने संबोधन में कहा कि अनुमान है कि इस वर्ष लगभग दुगुनी वर्षा होगी। हमें नई तकनीकों का ज्ञान होना बहुत जरूरी है। जलवायु परिवर्तन के कारण अधिक गर्मी, सर्दी और अधिक वर्षा का कुप्रभाव नई तकनीकों द्वारा खेती करने से नहीं होता और उपज भी कम नहीं होती। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि कोई भी समस्या हो वह संस्थान के टोलफ्री नम्बर पर फोन करके समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

प्रभागाध्यक्ष डा. नीरज कुलश्रेष्ठ ने किसानों को बताया कि आज ऐसी नई किस्मों की जरूरत है जिनमें विटामीन व मिनरल अधिक मात्रा में हों ताकि कुपोषण की समस्या से छुटकारा पाया जा सके। प्रधान वैज्ञानिक डा. प्रवेन्द्र श्योराण ने धान की बीमारियों जैसे कि तेला आदि के उपचार के लिये दवाइयों कें बारे में किसानों को बताया और प्रगतिशील किसान श्री विकास जी ने कहा कि हमने पिछले 11 सालों से खेतों में आग नहीं लगाई है और जीरो टिलेज बिजाई हैप्पी सीडर से करते हैं जिससे उपज दो–तीन किवंटल अधिक आती है।

इससे पहले प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा देश के विभिन्न राज्यों के 5 आधुनिक कृषि करने वाले किसानों के साथ वार्तालाप, विशेष गुणों वाली 35 फसल प्रजातियों का विमोचन, आईसीएआर–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, रायपुर का उद्घाटन तथा चार विश्वविद्यालयों को स्वच्छ हरित परिसर पुरस्कार वितरण समारोह का सीधा प्रसारण भी वेबिनार के माध्यम से सभी को दिखाया गया।

कार्यक्रम का संचालन प्रधान वैज्ञानिक डा. आर. के. सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्थान के सभी प्रभागाध्यक्ष अधिकारी/कर्मचारी, विभिन्न गांवों से आए किसान उपस्थित रहे।